कुसुमा कथा

मुक्ता

कुसुमा कथा

कहानी

मुक्ता

कुसुमा कथा

कुसुमा के आँसू न थमे। देवताओं, पितरों ने डराया, अपशकुन का भय दिखाया। चाँद के खटोले पर सवार परियों, किन्नरों ने उसका मन बहलाया लेकिन कुसुमा के आँसू न थमे। बादल के गुब्बारों के बीच से अचानक जो एक चेहरा उभरा, कुसुमा की पलकें झपक न पाईं। लाल भभूकी अठन्नी बिंदी में जैसे शीतला माता अवतरित हों। आजी थीं। कुसुमा की अजिया सास।

" आँसू पोंछ कुसुमा। गाँव की मर्यादा बचा। इस गाँव की मिट्टी अभिशप्त है। मुक्त कर कुसुमा! मुझे मुक्त कर। "

कैसी देवभाषा बोल रही थीं आजी। कुसुमा का तन-मन चंदन और कुसुमा हो गई चंदन वन की तपस्विनी। यह रहस्य केवल मड़िया में बँधी गैया ने भाँपा। आज वर्षों बाद उसने कुसुमा को खिलखिलाते देखा। लपककर वह आगे बड़ी। कुसुमा ने हाथों पर खुरदरी जीभ का स्पर्श महसूस किया। वह गैया को दुलारने लगी। पूस की ठंडी रात। अभी अँधेरा छँटा न था। मँड़ई के बाहर कीड़े की राख ठंडी हो चुकी थी।

कुसुमा ने बालटी गैया के थनों के बीच लगा दी। वह नरम हाथों से घुटनों के बीच फँसी बालटी में दूध की सफेद धार उतारने लगी।

हफ्ते-भर से रौनक है। लोगों का आना, चहल-पहल, सोहर बन्ना। आज की साइत है। जेठ के बेटे का जनेऊ है।

आज से ठीक बीस साल पहले भी ऐसी ही रौनक हुई थी। हाथ-भर के घूँघट में कुसुमा को कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। खिलखिलाने-हँसने की आवाजों में ढोल और गीतों के स्वर दबे जा रहे थे।

" अब देखना है गृहस्थी में किसका जोर रहेगा भैया का या भउजी का। " छोटी ननद बीना की आवाज कोहबर घर में गूँजी और साथ ही ' टन्न...' से पानी भरे परात में सोने की अँगूठी गिरने का स्वर हुआ। कुसुमा ने पीढ़े पर पैर रखा और बैठने का उपक्रम

करने लगी। चरमराकर पीड़ा ऐसा दरका कि दो टुकड़ों में चिर गया। कड़वी हँसी की सामूहिक धार के बीच कुसुमा की देह पसीने से नहा उठी। बीना के भैया ने झटककर गाँठ खोली और कोहबर घर से बाहर हो गए।

" हाय भउजी..." बीना का करुण स्वर गूँजता रह गया। बीना के रूपवान भैया को कोमलांगी सुंदरी की अपेक्षा थी। पूरी बिरादरी को अकेली न्योतनेवाली, कर्मठ, छ: भाइयों की अकेली बहन कुसुमा का स्वस्थ गदराया शरीर अभिशाप बन गया। बीना के भैया ने पलटकर गाँव का रुख नहीं किया। किस्से-कहानियों की तरह ही कुसुमा पति की कथा सुनती और सूनी आँखों भोर जगाती। व्रत, पूजन, उपवास की हर तिथि का छोर पकड़े अंत में आँचल पसारकर प्रार्थना करती-जैसी सबकी बनी वैसी कुसुमा की बनाओ देवी मैया!

आजी की आँखों के सफेद कोये और फैल जाते। गीली आँखों फटकारतीं, " बावली, ओ पापी बदे काहे आपन हाड़ गलावत हऊ ...। "

कुसुमा बिलखकर आजी की गोद में समा जाती। आजी थपथपातीं और बड़बड़ाती जातीं, " अभागा ... त...ऊ...है। तू काहे रोवत हऊ... कम...थी...या...। "

ऐसे समय कहीं-न-कहीं से बर्तन गिरने की ध्वनि अवश्य आती। आजी घबड़ाकर सुमिरनी ले बैठती। कुसुमा घूँघट खींच रसोई की ओर चल पड़ती। सास की कठोर आँखों का सामना करना कुसुमा के लिए संभव न था। कुसुमा का घूँघट सास के सामने कभी न उठा। आजी का कवच सुमिरनी थी। पके धान-सी भव्य आजी कुसुमा के लिए पूरी धरती थीं जिसमें समाकर कुसुमा फिर लहलहाने लगती । उसे ठूँठ होने से बचा लिया था आजी ने।

भा...आँ...आँ...

आवाज सुनकर चौंकी कुसुमा। जाने कब से तड़प रही है गैया। अपनी धुन में खोई कुसुमा ने बछड़ा भी नहीं खोला था। रह-रहकर जैसे मूर्छा-सी आ जाती है। आजी की मृत्यु के बाद कुसुमा के रात-दिन बिलकुल काले हो गए। अपने हाड़ हो गए शरीर पर कुसुमा ने भरपूर दृष्टि डाली।